श्रीवृन्दावनविहारिणे नमः ।

पूर्णविलास ।

तथाच—

गोपीचन्द्रविनोद

श्रीमत्परमहंसोदासीन शिरोवतंस—
स्वामि ज्ञानदासजी के शिष्य
गोपालदासने निर्मित
किया.

उसी को

शिवलाल गणेशीलाल ने
अपने "लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय
मुरादाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया

दोहा ।

गाथा पूरण भक्त की, अवश देखने योग ॥
अङ्ग कटाये धर्म हित, त्याग सकल सुखभोग ॥

प्रथमवार १५०० संवत् १९६२

हरिओ३म्।

विज्ञापन.

सर्व महाशयों को विदित हो कि १८२४ वर्ष हुए हैं श्रीयुत महाराजराजा शालिवाहन जी को भये तिनके पुत्र श्रीमत्पूर्णजी परमधर्मज्ञ धर्मधुरंधर हुए हैं जिनके जीवनचरित्र के सुनने से अत्यंत अधर्मस्थ पामर मूढ पुरुषों को भी स्वधर्म में रुचि उत्पन्न होवे है तिन दोनों पिता पुत्रकी धर्मनिष्ठता द्योतन करनेवास्ते दोहा चौपाई सवैया कवित्त आदिक भाषा छंदोंकरके श्रीयुत पूर्णजी का चरित्र पूर्णविलासनाम यह ग्रंथ रचा है करुणा शृंगारादिक विविध रसों करके भूषित है ऐसा यह मनोरंजक काव्य है कि जहां से आप देखेंगे वहांसे ही आपको प्रिय लगेगा जबतक दो चार पाठ नहीं करचुकोगे तबतक आपको संतोष नहीं आवेगा यद्यपि इसका चरित्र पंजाबदेश में अत्यंत प्रसिद्ध है बहुत कवियों ने अनेकप्रकार से काव्य करा है परंतु वे सर्वकाव्य पंजाबी बोली में हैं और पंजाबी गुरुमुखी अक्षरों में ही प्रायः छपे हैं सर्वदेशके उपयोगी नहीं हैं किंचश्रुतिस्मृति पुराण इतिहास पिङ्गलकाव्य अलङ्कार से भी वे ग्रंथ बहुत विरुद्ध हैं पंजाबीलोक भी जो साक्षर हैं उनको वो ग्रंथ प्रिय नहीं लगते हैं किंतु केवल कहानी किस्सा के समान बालक बांचे हैं तिनमें से विरुद्ध अंश निकासके योग्य अंश का ग्रहण करकेश्रुतिस्मृति पुराण इतिहास पिङ्गलकाव्य अलङ्कारों के अनुकूल सर्वदेश के उपयोगी सरल व्रज भाषा में यह पूर्णविलास ग्रंथ रचा है इसमें जो कोई संस्कृत कठिन शब्द थे उनकी टिप्पणि भी करदी है नाटक की रीति

से इसका काव्य है नाटक करनेवालों को बहुत उपयोगी है हरतरह के पुरुषों के मनको प्रसन्न करनेवाला है धर्मशास्त्र भक्ति ज्ञान वैराग्य शृङ्गारादिक अनेक विषय इसमें आवे हैं सर्व कविजन पाठकगणों से सविनय प्रार्थना है कि जीवभाव से जो कुछ इसमें मेरी भूल होवे सो शास्त्रानुसार शोधलीजिये परंतु तिस तिस छंद के ज्ञानविना दीर्घ को ह्रस्व ह्रस्वको दीर्घ नहीं करिये यदि काव्य कोश अलङ्कार छंदोज्ञान आपको यथावत् है तो आप मालिक हैं अलंविज्ञेषु ।

किंच इसके आगे गोपीचंद्रविनोद है सो भी अद्भुत अलौकिक चरित्र है माता ने स्वयं उपदेश करके अपने पुत्र श्रीयुतगोपीचंद्र राजा को फकीर करा है तथाच वैराग्यभास्कर तो आपने सुना होगा जिस में संन्यास का अधिकारी तथा कालधर्मादिक वर्णन करे हैं मूल संस्कृत श्लोक भाषाटीका सहित है संवत् १९१२ में श्रीकृष्णदास क्षेमराज के श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना में छपा है ॥ तथाच भक्तिप्रकाश अब छपने को तैयार है जिस में नवधाभक्ति पराभक्ति का वर्णन है मूल संस्कृत श्लोक भाषाटीका सहित है ॥ और गोपालविलास ग्रंथ अब रचके तैयार करा है दोहा चौपाई कवित्त सवैया हरिगीतिका आदिक नाना भाषा छंदों करके भूषित है जिसमें आनंद कंद श्रीकृष्णचंद्रजी के चरित्र हैं प्रमाण ग्रंथ का ४०० पृष्ठ हैं भगवत् की इच्छा अनुसार समय पाके वह भी छपजायगा ।

शुभंभूयात् हरिओ३म् ।

श्रीकृष्णभगवते नमः।

पूर्णविलास

कविवचन दोहा।

पूरण जाको भक्त है, जो सब पूरण वास ॥
सोई प्रभु पूरण करे, पूरणभक्तविलास ॥ १ ॥
विक्रमजीत सुवंशमें, शालीवाहनभूप ॥
भये देश पञ्जाबमें, स्यालकोट आनूप ॥ २ ॥
भूपतिकी दोभारया, बड़ी इच्छराजान ॥
छोटीलूणा जासने वशराखा सलवान ॥ ३ ॥
बडीनारिके उदरसे, भया पुत्र गुणखान ॥
सुनकर भूपति ज्योतिषी, बोले कर सन्मान ॥ ४ ॥
जातकर्मकर लगनलख, रच टेवा मतिमान ॥
लगेसुनावन दोषगुण, पण्डित कर व्याख्यान ॥ ५ ॥

पण्डितवचन झूलना-छन्द।

सुनो भूपजी पुत्र है भागशाली, हरीभक्त वीरक्त

---

१ शालिवाहन। २ नांदीमुख श्राद्धादिक। ३ पञ्जाब में झूलना छन्दको बैत कहिते हैं।

ओदार भारा । गुणज्ञान से पूरण है नामपूरण, भक्त-राखिये धर्मको जानवारा ॥ प्रकट होयगा लोक में तनुजतेरा, इसे वंदना करेगा जगत् सारा । नहीं देखना पुत्रको वर्षवारां, पुत्र हर्ष अरुशोक का देनहारा ६

भट्टवचन–सवैया ।

जयहो नरनाह उदारमते, तुमरे यशकी धवला जगछाई । हरि क्षीरपयोधर खोजत हैं, नहि पावत हैं तिसको जलशाई ॥ शिवखोजत हैं रजताचलको, करिको सुरराजदशोदिशजाई । अवराहु विलोकत है शशिको, कमलासन देखत हंसप्रधाई ॥ ७ ॥

कवि वचन दोहा ।

पण्डित नाई भाट पुन विदा करें अवनीश ।
भूषण भोजन वस्त्र धन, देकर बहुबखशीश ॥ ८ ॥
पांच वर्ष के भये जब, पूरणभक्त सुजान ।
पण्डित से पढनेलगे, भक्तिकर्म विज्ञान ॥ ९ ॥

पण्डित वचन भूलना-छन्द ।

प्रथम पहिर उपवीत शुभकर्म करना, करो संधियोपासना होम प्यारे । भजन पाठ अरु गायत्री जाप

१ समुद्र २ कैलास । ३ ऐरावत हस्ती । ४ ब्रह्मा ।

करिये, शस्त्र अस्त्रको सीखिये धनुषधारे ॥ सत्य बोलना पाप नहि भूल करना, मात तात को कीजिये नमस्कारे । सदा कालको जानना सीस ऊपर, राम देखना सर्वमें नाहि न्यारे ॥ १० ॥

कवि वचन दोहा ।

भये युगल दशवर्ष जब, वचन भूपका मान ॥
गया राजदरबार में, पूरण धर्मनिधान ॥ ११ ॥
नमस्कार कर भूपको, सबको कीन्ह जुहार ॥
अतिप्रसन्न हो नृपति ने, पूरणको उरधार ॥ १२ ॥
दिये दान बहु भूपने, हर्ष न हृदय समात ॥
पुत्रसगाई कारणे, कहत सचिवसों बात ॥ १३ ॥

राजा वचन झूलना ।

सुनो तात वाज़ीर मैं धन्य जगमें, बडे भागसें ईश ने तनुज दीया । पुत्रदूध सामान्य नहि लोकमाहीं, जिने तनुज जायातास सफलजीया ॥ पुत्रजन्म उत्साह सब देखिया मैं, चित्त चाहता पुत्रबीवाह कीया । सोंप राज्यका भार अब तनुजताहीं, करूं भजन मैं जास से मिलत पीया ॥ १४ ॥

पूर्ण वचन झूलना ।

सुनो तात अपराध मम माफकरिये, वचन फेरना

धर्म नहि पुत्र केरा । करो ज़िकर ना तात उद्वाहकाजी, नारि नागिनी सें डरे चित्त मेरा ॥ नारि नाहिरी ज़ासके धाममांहीं, नहीं पुत्रसो मित्र नहि दासचेरा । मुझबांधके बेडियां डालनाहीं, हाथजोडके भाषता पुत्रतेरा ॥ १५॥

कवि वचन दोहा ।

दुखितभया नृपवचन सुन, जिममछरी बिननीर॥
नृप समुझावन कारणे, बोले चतुर वज़ीर॥१६॥

मन्त्री वचन झूलना ।

करो सोच नहि बालका दोष कोई, सुनो राज महाराजजी चित्तलाई । नारि संगके सूखका ज्ञान नाहीं, अबी बालको भोग का ख्याल काई ॥ मरे भेक[2] जिम जीवते लोकमाहीं, भाद्रमास में जबी बरसात आई । दिवसरात चाहे मनुज नारिकोजी जबी आय जुवानी नें ज़ोरपाई ॥ १७ ॥

कवि वचन दोहा ।

सुनकर वचन वज़ीरके, भूपति उर हर्षांत ॥
पूरणको आज्ञा करी, दर्स हेत युगमात ॥ १८॥

राजा वचन झूलना ।

नमस्कार करिये जाय मातरां को, पुत्र धर्म को

१ विवाह । २ मेंडक ।

सर्वदा पालताता । जास वासते पुत्रको लोकचाहे, सुखी कीजिये बंधुजन तात मात॥पढो शास्त्रको चित्त लागाय के जी , उभय लोक में होय गो कुशलाता । जवी चाहगा आप वीवाह को जी , तवी करेंगे लाल जी साकनाता ॥ १६ ॥

कवि वचन दोहा ।

लघु मातः के मान हित, लूणा के शुभद्वार॥
बाहिर भृत वैठाय के,पूरण गया कुमार॥२०॥

पूर्णवचन झूलना ।

पूर्णनाम मैं पुत्र सलवान का हूं , करूं मात जी आपको नमस्कारा। कृष्णराधिका रूप हैं तात माता, बडे भागसे करा है दर्स थारा ॥ दयामात अरु तात की पुत्र को जी , उभे लोक कल्याण है खूंट चारा । माथ हाथ धर मात आसीस देवो , पांउ भक्त गोपाल की धर्म सारा ॥ २१ ॥

कवि वचन दोहा ।

देख पुत्रके रूप को, मोहित हो नृपनारि ॥
बोली लूणा पापिनी, मान पुत्र को जार ॥२२॥

लूणा वचन झूलना ।

वृथा झूठ की मात बानावना है, पियादूध कब बैठ

१ सेवक ।

के गोदमेरे। जना औरने और को मातभाखै,सोच समुझ नहि आवती चित्ततेरे॥ उमरएक तेरी मोरदेख प्यारे, मौजमाणिये पलँग में बैठकेरे। बलिहार जावूं तेरे रूप सों मैं, भुजा सोहिनी मलतूं कंठ मेरे। २३॥

पूर्ण वचन झूलना।

जासनारितू सोउ है तात मेरा,गुरू दार तू पूज्य है समुझ माई। पुत्र जानके प्यार तुम देवनाथा, पाप वाक्य बोलै किधों भागखाई॥ धर्मछोड अपधर्मको करैं है तू, पाप बुद्धि तैने कहो कहां पाई। बुरे कर्म जब मात सें पुत्र करसी, तबी मेदिनी उलट पातालजाई॥ २४॥

लूणा वचन भूलना।

रची नारिनर हेत करतार ने जी, भोगभोगने में नहीं पाप काई। कामशास्त्र में शंभु ने आप भाखा, सर्व नारि भोगो तजो एक माई॥ देवलोक माहीं एक नारि को जी, पिता पुत्र भोगै गुरू शिष्य भाई। नारि संगसों पाप द्विज झूठ बोलै, भरम त्याग बैठो पलँग हर्ष पाई॥ २५॥

पूर्ण बचन भूलना।

करैं नरक में वास गुरु नारि भोगी, शशी सूरजौंलो

१ पिता। २ स्त्री।

रहें व्योम माई। कहा आप करतार ने वेद माहीं, नहीं ब्राह्मणाकहा है झूठकाई॥ किसी मूढ ने भाखिया वाममारग, कहें रुद्रका झूठही नामलाई। पाप पुण्य लागे सदा भूमिमाहीं, नहीं नाक में पाप अरु पुण्य राई॥ २६॥

लूणा बचन झूलना।

राजपुत्र सुंदर सुनो बात प्यारे, मुझे ज्ञान उपदेश कर वंचनाहीं। तुझे कंठ लावूं हृदय शीत होवे, फसा चित्त मेरा तोर रूपमाहीं॥ कहा मान मेरा अभी भूप सूनू, यदी जीवनेकी तुझे आसकाई। तोर रुधिर से हस्त प्रक्षालें करके,अन्नखाऊँगी नाहि तो मानजाई २७

पूर्ण बचन झूलना।

सुनो मात ओठाय के हस्त भाखूं, तोरि सेजपर पैर ना भूल धरना। गैरल खावना मुझे मनजूर माई, खडे शूल में चढन का बूलकरना॥ नहीं दाग लागाऊँगा बाप दादे, अनलकुंड में कूदके आप जरना। टूक टूक कर शस्त्रसें काट डारो, सुनो धर्म को त्याग के नाहि मरना॥ २८॥

कविवचन दोहा।

पूरण लूणा सदन तज,गया मातके द्वार॥

१ स्वर्ग। २ धोयके। ३ जहर।

करी वंदना मात ने, लिया गोद बैठार ॥२९॥

इच्छरा वचन झूलना ।

चिरंजीव तूं मात बलिहार जाये,उदासीन क्यों तात मुखचंद्रथारा। यदी घाम का देह में दुःख कोई,कर सनान अरुपीजिये शीतवारा॥ यदी भूख लागी तुझे लाल मेरे, खाव पूप का चौरियां क्षीर थारा। कहो तात संकोच को त्यागकरके, करूं दूर तेरा अबी दुःख सारा॥३०॥

पूर्णवचन भूलना ।

नहीं घाम लागी तनु मातमे रे, नहीं भूख पुनप्यास कीबात कोई। गया आज लघुमातके गेहमाहीं, मुझे देख लूणा बुरी आंखहोई ॥ बुरी दृष्टि देखी जबी तास कीमैं, तबी भागिया मात अपधर्म जोई। करूंसोच मैं मातजी भूपताहीं, कहाबात सीखायगी मातसोई २१

इच्छरा वचन भूलना ।

रहो नित्य आनंद में लाल मेरे, सुनो सोचना कीजियेतात कोई। हरिश्चंद्र भूपाल रौतास का वा, भया पांडवों का प्रतीपाल जोई ॥ नहीं धर्मको त्यागना लोकमाहीं,तुझें होयगाधर्म साहायसोई। नहीं सांचको लागती आंचबेटा, नही धर्मसामान्य है मित्रकोई३२॥

कविवचन दोहा ।

गया रातको भूमिपति, लूणा केगृहमाहि ॥
भूषण वसन तयागके, पडी भूमि में जाहि ३३
देख दशा नृप नारि की, भया भूप उरदाह ॥
मन प्रसन्न हित तासके, तब बोला नरनाह ३४।

राजा वचन झूलना ।

कहो भामिनी गेह है शून्य कैसे, नहीं जागता है श-मादान कोई।कहो हार शृंगार को त्याग कैसे, वस्त्र जे-वरोत्तारके भूमि सोई॥ फटेचीर पहिरे चित्तखिन्न कैसे, प्रिये खोलके सीस को काहि रोई।अबी बोलती क्यों न-ही साथ मेरे, कहो कौनसी आजतक सीर होई ॥३५॥

लूणा वचन झूलना ।

नहीं भूलहै आपकी प्राणप्यारे, बुरे भागमेरे मुझेदुःख-होई ।उसे आपने दुःखका हाल भाखे, कहा नीतिमेंबां-टके लेतजोई॥ नहीं दीसता लोक में जीव ऐसा, दु-खी जीवके जौनसा दुःख खोई । लगादुःख जैसा मुझे आजराजा, नहीं औषधी है विनाकाल कोई ॥ ३६ ॥

राजा वचन झूलना ।

करूं भूप कंगालको भाख जोतू,मही रालकोदेश नी-

१ दीपक ।

कास देवूं। बुराजासने आपका कौन प्यारी, अभी तासके प्राण नीकासलेवूं॥ प्रिये भाख जोतू करूं हालसोई, करे बाजे प्यारी नहीं अन्न जेवूं। करुं पुत्रकीलक्ष सौगंदराणी, कहूं सत्यदेवी नहीं झूठ सेवूं॥ २७॥

लूणावचन झूलना।

तोरपुत्रआया आज धाम मेरे, पुत्रजान मैं गोद बैठान लागी। सुनो भूपजी देखके रूप मेरा, जली पूरणे के हृदय कामआगी॥ हृदयसाथ लानेलगा पुत्र मोको, बुरी दृष्टि सं दुष्टकी बुद्धिभागी। लगी करन पोकार तो भाग गेया, करे पूरणेने उभे वंशदागी॥२८॥ उसे देखके लगतहै आग्निमोको, खान पान लागे सबी भोगखारो। यही चाहती हूं अबीपूरणे के, हस्त पाद को काटके कूपडारो॥ तासरुधिरसे पाणि प्रक्षाल पानी, पिवूं पूरणेने मेरा चित्तजारो। नहीं दोष दुर्पुत्र के मारने का, बुराआदमी मारना धर्मथारो॥ २९॥

कविवच दोहा।

लूणाके सुन वचन नृप, धरणि पडा मुरझात॥
जिमकिरातके[1] वाण से, मृगशावैक[2] गिरजात४०
रुदनकरत पिखैभूपको[3], पुनबोली नृपनारि॥

१--बिना।२भील।३बच्चा।४देखके।

मानो लवण बरूर है, प्रथम मार तरवार ॥४१॥

लूणा वचन भूलना ।

पड़े भूमि क्यों भूप जी गेह जावो, सबी देख लीना अबी ज़ोर तेरा । इसी वदन से हाल तूं भाखता था, करें कौन से ज़ोर दुख दूर मेरा ॥ रखो पुत्र प्यारा नहीं दुःख पावो, धर्म त्याग के कीजिये नरक डेरा । मरूं मार तरवार मैं पास तेरे, अयश होयगा लोक में भूप तेरा ॥ ४२ ॥

कवि वचन दोहा ।

व्यथित सर्पपद पर्ससम, करके क्रोध नरेश ॥
लूणा सें बोलत भया, प्रलये यथा महेश ४३

राजा वचन चौपाई ।

सुनो पापिनी नारि अभागी । तुमें कुमति यह कैसी लागी ॥ पूरण बाल बुद्धि अति भोरा । यह परपंच सकल है तोरा ॥ ४४ ॥ नहि देवे हरि तोसम नारी । कुलचंदन तरु भयी कुठारी ॥ पाप विचारत भयी न पीडा । वचन कहत मुख पडे न कीडा ॥ ४५ ॥ कैकेयी सम तूं भइ नारी । चौदें लोक भयी तव ख्वारी[1] ॥ नारि घात अघ डरूं न जोही । काटूं सीस तोर सुतद्रोही ४६ अबी समुझ नहि फिर पछतावे । नरक समान सदा दुख

1—फजीता ।

पावे ॥ जाविध धर्म पुत्र नहि जाई । सोच हृदय सो करो उपाई ॥ ४७ ॥

लूणावचन चौपाई ।

धर्मराख चाहे सुत राखो । दो नहि होत वृथा क्यों भाखो ॥ जो पूरण कल नहि मरवावूं । सुन नृप गरल खाय मरजावूं ॥ ४८ ॥

कवि वचन दोहा ।

अतिकठोर सुनवचननृप, पडाभूमि मुरझाय ॥
हायपुत्रहापुत्रकह, तडफत रात्रविहाय ॥ ४९ ॥
भयाभोर जब सचिववर, गया भूप के द्वार ॥
लूणाको पूछतभया, नृपकीदशानिहार ॥ ५० ॥

मन्त्री वचन झूलना ।

भया आजके मातजी धाम तेरे, हरीयान[1] भीताफणी फूतकारे[2] । शशी सूर आकाश सें भूमिमाहीं, गिरेदीसते राहु के भीति[3]मारे ॥ डरा सिंह सें वा करी राजराणी, बली वृत्र[4]सें वा डरेदौंन[5] वारे । डरे पापवा झूठके बोलनेसें, गिरे नाथ मेरे महीपाल प्यारे ॥ ५१ ॥

लूणावचन चौपाई ।

पूरण पूरण भूप पुकारी । करी वितीत शर्वरी सारी ॥ जावो तिसें बुलावो लाई । पूछे भूपति को सो आई ५२

१ गरुड । २ स्वासलेवे है । ३ भय । ४ इंद्र । ५ रात्रि ।

कविवचन दोहा ।

सुनकर वचन बज़ीर तब, गमना पूरण द्वार ॥
समाचार सब भूपका, भाखा तिसें उचार ५३

मंत्रीवचन झूलना ।

सुनो राजसुकुमार उदार भाई, पडे भूमि में भूप जी तात थोरे । पुत्र पुत्र पोकारते रातकाटी, करे रुदन अरु धरणि में सीस मारे ॥ चलो देखिये भूप को पूछिये जी, विना पुत्र को तात के दुःख टारे । पडी कोप आलय सुनो मात लूणा, नहीं जात जाने नारि चरितसारे

कवि वचन दोहा ।

सुनकर वचन वजीर के, समुझ मातकीचाल ॥
चले इच्छरा सहितदो, जहांपडे भूपाल ॥ ५५ ॥
करप्रणाम पूरण नृपहिं, पूछत है कुशलात ॥
देख पुत्रको भूमिपति, वारवारउरलात ॥ ५६ ॥

पूर्ण वचन चौपाई ।

कहो तात क्यों भये दुखारे, तवहित त्यागूं प्राणपियारे ।
जिससुतजियतजनकदुखपाई,सोसुततातमूत्रश्रुतिगाई

लूणा वचन चौपाई ।

भूलगया कलकी तूंबाता । पूछत भोले भावद ज़ाता ॥

१—भवन ।

जैसी तुम कीनी ममसाथा। अबही सो फलपावो हाथा ५८
अनुज बधू भगिनी सुत नारी। यह समान कन्या महतारी
इनें कुदृष्टि न देखे कोही। बिन तुमरे पापी गुरुद्रोही॥ ५९

पूर्ण वचन चौपाई।

जो अघ मातपिता गुरुमारे। गोवधसों भूसुर[1] पुर जारे॥
अघलागो सो मोको ताता। जो कुदृष्टि देखी मैं माता ६०
तप्त तेल में हाथ गिरावूं। गरम लोह को सीस उठावूं॥
दग्ध होय जोएको बारो। दंड दीजिये नयननिकारो॥ ६१

राजावचन चौपाई।

सुनो तात नहिंपातक तेरा। यह अभाग सबजानो मेरा॥ तो समपुत्र ईशने दीना। वैरिणि नारी ने हर लीना॥ ६२॥ जो नरनारिविवश जग होई। चार पदारथ खोवत सोई॥ जो जन करत युवति विश्वासा। सो मूरखपावत दुखरासा॥ ६३॥

कविवचन दोहा।

सुनकरवचन नरेशके, तमक उठी नृपनारि॥
सबके उरघायल करत, जीवालियेतरवार ६४॥

लूणा वचन चौपाई।

तुम धर्मज्ञ पुत्र तव साधू। झूठ बोल पड़ नरक अगाधू॥
चार चमार वेग बुलवावो। कूप समीप पुत्र लेजावो॥

[1] ब्राह्मण।

करपद। विनकर सुतको गेरो। तब दुख दूर होयगो मेरो ६५

राजा वचन चौपाई।

सुन वज़ीर यह भाखत जोई। धर धीरज करिये तुम सोई॥
तनधन सुत नारी सब जावो। सुन धर्म ज्ञान सत्य न सावो ६६

इच्छरा वचन चौपाई।

युवति हेत जो सुत मरवावो। चौदह लोक अयश तुम पावो॥
सुत युत प्राण जायँगे मेरे। यह सच कौन काम है तेरे ६७

मंत्री वचन चौपाई।

सुनो नाथ यह साँची भाखत। क्यों कुलनाश करो सच राखत
निष्कलंक सुत जो मरवावो। तो तुम उभय लोक दुख पावो ६८

राजा वचन चौपाई।

शिवि दधीच हरिचंद्र नरेशा। सत्य हेत बहु सहे कलेशा॥
दशरथ प्राण प्रिये घनश्यामा। सत्य हेत त्यागे सुत रामा॥
सत्य रहा रहिया सब कोई। उभय लोक सत की जय होई॥
जात साथ नहि सुत पितु माता। सत्य धर्म एको सँग जाता॥

कविवचन दोहा।

नृप मरज़ी लख सचिव ने, बोले चार चमार॥
हाथ पकड़ कर ले चले, पूरण भक्त कुमार ७१
नमस्कार कर भूप को, पुन प्रणाम कर मात॥

गमने पूरणमात पितु, वारवार उर लात ७२
फणीतजतजिमशिरोमणि,जीवतजतजिमप्रान।
तिमपूरणके त्यागमें, नृप राणीको जान ।७३।
रुदन करत पूरण भगत, देख सर्वकी ओर ॥
पुनप्रणामकर सकलको, कहत वचन करजोर॥

पूर्ण वचन चौपाई ।

करूं प्रणाम युगलकरजोरी। करनीमाफभूलजोमोरी॥
जबतक लिखा ईश संयोगा॥ तबतक तुमरेयुतसुखभोगा
भयासमय अबबिछरन केरा। चलत न ज़ोर तुमारामेरा
सुनो सर्व जो मोरसचाई। तो तुमको पुन मिलहूँआई७६

कविवचन दोहा ।

पूरण के सुनवचन सब,रुदन करत दुखपात॥
हाय पुत्र हापुत्र कह, नृप राणी उरलात ७७
करेजुदा जल्लादने, पुत्र मात जब तात ॥
मात पिता तब रुदन कर,गिरेभूमि मुरछात७८
रुदनकरत सब लोकके, चले चमार उजार ॥
हस्तपाद सब काटके, डारा कूप मभार ॥७९॥
पूरण का ले रुधिरते, गमने लूणाद्वार ॥
जबकर धोये रुधिरसे, तबभा हाहाकार॥८०॥

इच्छरा विलाप रेखता।

कहांजा पुत को देखूं,दशो दिश में अँधेरी है ॥
जहां मम लालजी खेलें, तहां होगी उजेरी है ॥
लगी होगी क्षुधा बेटा, भयी रोटी अबेरी है ॥
खिलें मत दूररे ललना, ढुंढे तो मात तेरी है ॥
विना तव भुप रासोई, करेना कहि घनेरी है ॥
लगी होनींद आसोवो, सुनीसी खाट तेरी है ॥
तुम्हें देखें सखातेरे उठो क्यों कीन देरी है ॥
विना गोपाल को मेरो, सुने पोकार मेरीहै ॥८१॥

कवि वचन दोहा।

कर विलाप राणी गिरि, तात काल वाजीर ॥
पकड भुजा ग्रह लेगये, बहु विध देकर धीर ८२

मंत्री वचन झूलना।

सुनोभूपराणीकरो शोकनाही, यही लोकव्यवहार है सर्वकेरा। कबीहोय संयोग वीयोग होवे,सदासाथना ही पतीपुत्र चेरा ॥ वृथा रोयके देह का नाशकरना, तजो मोहमाई कहा मान मेरा । सबी आसरे और तूं त्याग राणी, भजो ईशको जोकरे मोक्षतेरा ॥८३॥

कवि वचन दोहा ।

तास दिवससें नृपति नहिं, वैठे तखत मझार॥
राज्यसौंपसवसचिवको, आपभजें कर्त्तार॥८४॥

इति प्रथमोऽङ्कः

अथ दृश्यस्थान पूर्णकूप ।

गमने द्वादश वर्ष जब, श्रीगुरुगोरखनाथ ॥
आये पूरण कूपमें, शिष्य लिये बहुसाथ॥८५॥
जल कारण इक साधुने, देखा कूप मझार ॥
पूरणको लख कूप में, गुरुपै करी पुकार॥८६॥

सुरतनाथ वचन झूलना ।

सुनो नाथ जी वात आश्चर्य की है, जवी नीर नीकासनेध्यान कीता । तवी कूप के वीच में नजर आया, किसी आदमी का गुरो देह जीता ॥ डरा देख मैं ना रहा होश कोई, लिया पात्र नीकाल मैं नाथ रीता । चलो देखिये भूत वा प्रेत कोई, किसी साधु नाही अवी नीर पीता ॥ ८७ ॥

कविवचन दोहा ।

सुनकर अद्भुत वारता, गुरू मंडली साथ ॥

देख कूप के बीच में, पूछत गोरखनाथ॥८८॥

गोरक्ष वचन चौपाई।

कहो कौन तू कूप मझारी। भूत प्रेत वा देव सुरारी॥
कह तू हाल आपना जोई। तब बाहिर हम काढें तोई८९

पूर्ण वचन चौपाई।

नहिमैं भूतप्रेतनहि दानव। तुमनिश्चय जानो मैंमानव।
ईश्वरहेत नाथ नीकारो। कहूं हाल मैं तुमसों सारो॥९०॥

कवि वचन दोहा।

साधु उतारा कूपमैं, पूरण को लेसाथ ॥
हस्त पाद लेतासके, बाहिर आये नाथ॥९१॥
पूरणके कर जोर पद, ऊपर चादर डार ॥
गुरुगोरखजीजोरकर,हरिसोंकरतपुकार॥९२॥

गोरक्ष वचन मत्तगयंद छंद।

कृष्णहरे रघुवंशमणेहर, माधव वामन राम मुरारे।
संकट दूरकरो जनके तुम, वेद पुराण कहें युग चारे॥
राघवमैं शरणागतहूँ तव, बाल पडा तुमरे प्रभु द्वारे।
हाथनसोंपयपानकरेयह,पादनसोमगमांहिपधारे॥९३॥
मांगतहूँ करजोर यही वर, होय दयालु दिहो सुखकारे।
जेकरमैं शिव बालयती जग, योषितसें नहि वाकउचारे॥

१—यदि।

तोकरपाद जुरें इसके अब, जेकर प्रीति सची पद थारे
नाहितुभोजनकोतजकेअब,जावतहैंप्रभुप्राणहमारे ९४

कवि वचन दोहा ।

मृत संजीवन मंत्रको, पढकर गोरखनाथ ॥
पूरणके सब देहमें, जल सींचा कुशसाथ ९५
रामराम जप उठ खडा, पूरण भक्त सुजान॥
गोरखके पद वंदना, कीनी दंड समान ॥९६॥

पूर्णवचन चंद्रकला छंद ।

शुभवार मुहूरत आजघडी, गुरुभागनसें तुम दर्सदिया ।
नहिंसंतसमानदयालुदिसे, मुझसेनरकादुखदूरकिया ॥
भवकूपगिरे नरतारण कों, जगसंतन नेअवतार लिया ।
तुमरेपदपंकजकोप्रणमो,जिनकीकरुणामृतदेहजिया ९७

गोरक्षवचन मत्तगयंद छंद ।

नामकहा तवगेहकहांकिस, मातसुभागिनिनेतुमजाया
सौम्यतुमेंवदकौनसुयोषित,दूधदियाअरुगोदखिलाया॥
कौन पितातवभूपतिभूसुर[2], वासुरआलय[3] सेंतुमआया ।
कौनकठोरमतीजननेकट, हस्तपदांबुजकूपगिराया ९८

कविवचन दोहा ।

पूरण ने सब भाखिया, जो कुछ वर्त्ता साथ ॥

---

१ बडे । २ ब्राह्मण । ३ स्वर्ग ।

सुनकर अद्भुत वारता, पुन पूछत हैं नाथ९९

गोरक्षवचन सवैया।

नरभूषण राजकुमार रहा, किम संवत द्वादश कूप मझारी। बिन भोजन छादन शौच बिना, किम कूप भयी गुजरान तुमारी॥ बिन शैन करे परयंकविना, हिम काल रहा किम शीतल वारी। तुम सत्य कहो सुविशाल मते, सुन संशय लागत बुद्धि हमारी१००

पूर्णवचन मदिराछंद।

ब्रह्मशरानल[1] सें जिस माधव, भूप परीक्षत राख लिया। नाग अघासुर के मुखमें ब्रज, बालन को जिस जीव दिया॥ भ्रात[2] बडे गुरुके सुतको जिस, यादव नाथ सजीव किया। पत्थर में कृमि को प्रतिपालत, तास कृपाकर नाथ जिया॥ १०१॥

गोरक्षवचन सवैया।

सुन सुंदर सौम्य सुजान मते, बहु काल भया तुम को दुख भारी। तव तात पुकारत है घरमें, जननी तव रोवत आंख विगारी॥ अब जा तिनके दुख दूर करो, उर शीतल हो उनका सुखकारी। घर जा शुभ नारि विवाह करो, सुख सों गृह बैठ जपो असुरारी।१०२।

१ ब्रह्मास्त्र की अग्नि सें २ देवकी के पुत्र षट्।

पूर्णवचन सवैया।

अब और भये नहि मात पिता, वहही मुझको जिन कूप गिराया। इस योषित नागिनिसें हमने, बिन प्रीतिकरे इतना दुख पाया॥ जब नाथ विवाह करूं इस सें, तब और कहा करसी मम जाया। सबसों मन मोर निरास भया, तुमरे पदकी शरणागत आया॥१०३॥

गोरक्षवचन सवैया।

धरमज्ञ अदोष पिता तब है, वर पंडित वीर उदार अमाया। नहि नारि अधीन भया स्वपने, सत में फँसके तुमको मरवाया॥ उसको जन दोष लगावत जो, वह मूरख है तिस भेद न पाया। तब हेत महा दुख पावत है, रंजके जननी तब अन्न न खाया॥ १०४॥

पूर्णवचन सवैया।

अपने अपने सब स्वारथ के, सुत मात पिता अरु बांधव जाया। दुख पावत मोह समुद्र पडे, नहिं को किस का जग होत सहाया॥ इस हेत उदास भया सबसें, गृह जावन को मम ना मन भाया। मम मात पिता तुम हो गुरु जी, मुझको तुम शिष्य करो कर दाया१०५

गोरक्षवचन सवैया।

सुन बालक ख्याल करो मन में, दुखसों जग योग

१ स्त्री। २ तृप्तहोयके।

कमावन प्यारे। क्षिति शैन घरोघर मांगन है, मिलते नहि दूध दधी घृत थारे॥ नहि भीख कदाचित पावत है, तब देह दुखी जठरानल जारे। पद त्राण[1] बिना सिरछत्र बिना, चलना मग कोमल गात तुमारे ॥ १०६ ॥ सहना जगमान निरादर को, तज क्रोध मनोभव[2] को मनसारे। जिननाहि विवाह करा तिनके, तन मानस को मदनानल[3] जारे॥ वहयोषित को नित ध्यावत हैं, विशवास नहीं तब पूछकुवारे। घरजाकर भोगविलास करो, नहि योग करो सुनरे मतिवारे॥ १०७॥

पूर्णवचन सवैया।

दुखयावत आपकहेयतिमें,ममनाथ यथावतमैं सबजाने।
पर स्वामिन् बातकहूंसुनिये,नहिकूपनिवाससमानबखाने
नहिदूधदधी घृतचाहतहूं, करभीख स्वपेट भरूं चुनदाने।
नहिभीखमिलेतवतोषकरूं,बिनशावरपादनऔरसुहाने॥
वहुभोगन सें नहितोषकिसें, जबलाभभये तबलोभवढाने।
जिमईंधनसेंअनलाधिकहोनरत्यागविनासुखकोनहिजाने
जिनको वहुभोगनकी तृशना,नरमूढवहीदुखपंकसमाने।
जिसऊपरआपदयालुभये,तिसकोनहिनाथकुभोगसुहाने

गोरक्षवचन सवैया।

जननीतवधन्यपितातुमरा,जिननेहरिभक्तयतीसुतजाया
तुमधन्यमहीपतिभोगविषे,जिसकालवमानसनाभरमाया

१ जूती। २ काम। ३ काम अग्नि।

क्षितिराजकरोयतियोग करो, युगमेंकरजोतुमरेमनभाया
इकवारमिलोपरमातपितें,दुखदूरकरोउनकेसुखदाया ११०

पूर्णवचन सवैया ।

गुरुजी दुख कूप निकार पुना, अब गेरत हो दुख सिंधु मझारी । जग में अस कोन सुना हमने, अपने पद में जिस शृंखल[1] डारी ॥ इकवार जहां दुखपावत है, मतिमान तिसें फिरदेत बिसारी। करुणा करके सिर हाथ धरो, शरणागत जान मुझे भयहारी ॥ १११ ॥

कविवचन दोहा ।

पूरणभक्त सुजानको, विरति[2] शिरोमणिजान ।
शिखाकाटि पढप्रेषपुन,नाथदिया विज्ञान११२
डार कान में मुंदिरा, भगवा कीना वेस ।
पूरणने सब संतको, कहा नाथ आदेस ११३

गोरक्षवचन सवैया ।

त्रयदेह तथा शरकोशन से, भिन आतम एक सदा सब जाई । सतचेतन नाहि अकार जिसें, सुख रूप स्वसंतन होत सहाई ॥ तुम बैठ इकांत निरोध करो, मनको तब आतम देत दिखाई । बिन आतम ज्ञान न छूटतहै, नरकाभव बंधन कोटि उपाई ॥११४॥

पूर्णबचन सवैया ।

संत वाक उचार करे तुमने, उर धारालिये उपदेश

[1] बेड़ी । [2] विरक्त ।

तुमारे। नहि योग्य यहांपर वास गुरो, ममसात पिता प्रिय बंधु हमारे ॥ सुन के सब रोवहिगे मुझको, दुख-देवहिगे नहि छोडन वारे। कर सैलदशोदिश तीरथ में, फिर आय करूं शुभ दर्शन थारे ॥ ११५ ॥

गोरक्ष वचन सवैया।

पदसों अटना शुभ तीरथ मे, गमनो शिव मारग होवहि थारे। मुखसे भजना जगदीश्वरको, मन जोड सदापर ब्रह्म विचारे ॥ सुन तात असंग रहो सब से, यति पंडितको दुरसंगतमारे। परयोषितको जननी लखना, सबजीवनमांहि दया करप्यारे ॥११६॥

कवि वचन दोहा।

नमस्कार कर नाथको, बचन तासकामान ॥
गमना गंगातीर में, पूरण भक्तसुजान ११७।
गुरुने जिमिउपदेशिया, तैसेही तिस कीन।
संवत द्वादश योग में, पूरण होये लीन ११८
कठिन तपस्या देखके, इंद्र हृदय घबराय ॥
मंत्र हेत सुरनाथ ने, मंत्री लिये बुलाय ११९

इंद्र वचन सवैया।

यह राजकुमार उदारमती, वर धर्म धुरंधर पंडित

१ वेदमंत्र २ पांच ३ कल्याण

ज्ञानी । अधुना इसके सम नातपसी, नहि भोगन में इसकी मति सानी ॥ इस के तप तेज दिवाकर से, जर है मम धाम दशोदिश प्रानी । तपखंड न हेत उपाय रचो, नहि तो जगकी अब होवत हानी ॥ १२० ॥

देवमंत्री वचन सवैया ।

प्रमदा सम अन्य नदीसत है, तप खंड न हेत त्रिलोक मझारी । तर हैं सरिता बहु सागर को, नहि योषित की भग अंगुलिचारी ॥ कलिकाल विपेनहि जावत है, महि मंडल में त्रिदशालय नारी । तुमरे इस कारज को करसी, क्षिति में इक सुंदर राजकुमारी १२१ जिसका तनु गौर मनोहर है, जुलफांगल में जिमिनागिनिकारी । युगगोल कपोलन की उपमा, लवभाषण में कवि की मति हारी ॥ कुच कुंभ समान कठोर गुरू, भ्रुकुटी जिसकी तरवार द्विधारी । मुख सुंदर सुंदरि नाम सुनी, मन काम कुमोदिनिचंद्र उजारी ॥ १२२ ॥

कविवचन दोहा ।

सुरपति प्रेरी सुंदरी, तीरथ हेत विचार ॥
गयी गंगके तीर में, करके विविध शृंगार १२३
बनशोभाको देखके, हो प्रसन्ननृपनारि ॥
निजदासी को बोलके, बोलीवचन उदार १२४

१ अब । २ सूर्य । ३ स्त्री । ४ स्वर्ग की । ५ भारे ।

सुंदरीवचन कवित्त।

धेनु मृगराज चरें, एक महीखंड विषे, नवलाख संगचलें, भय नहीं ठाने हैं। सहज वैरकोत्याग, करें मिल अनुराग, सबी वन मृग पक्षी, बंधु सम जाने हैं॥ किस मुनितापसके, तपपरभावकर, विधिगति वाम भयी, भेद नहीं माने हैं। भुजगारि अहिमोर, रैवकरें घनघोर, खबर ले आवो मम, मनहरषानेहैं॥१२५॥

कविवचन दोहा।

सत्यवचन कह अनुचरी, गयी विपिन मंझार॥
देखत देखत गहेन को, देखे राजकुमार १२६
देख अलौकिक वस्तु को, हर्षितभयी सुजान॥
राणी के ढिग आय के, मुनिका कराबखान१२७

दासीवचन चंद्रकला छंद।

जसव्योममणी सम तेज महा, तनुछादित सौभग काम छटा। वररूपनिरोपम कौन कहे, कुसमायुधने निज हाथ ठटा॥ असमानव देव न कान सुना, मुख कंज प्रफुल्लित देह लटा। नहि भाखसकूं महिमासकली, सिरपीत जटा जिमि सिंह सटा॥ १२८॥

१ मूसा। २ गरुड। ३ सर्प। ४ शब्द। ५ वन। ६ सूर्य। ७ सुंदर। ८ कामदेव। ९ दुर्बल। १० ग्रीवा के बाल।

मम नेत्रन मांहि समाय गया, लखके तिस से नहि चित्त हटा। जग के अवरूप कुरूपलगें, पय पान किये जिम छाछ खटा॥ अवरूप गुमान करे मतको, इस रूप अगे सब रूप फटा। इस से जिस नारि न संग किया, तिसने विरथा जग धूरचटा॥ १२६॥

कविवचन दोहा।

दासी के सुन वचन तब, गमनी गेहन मझार॥
देखनाथ के रूप को, मोहित होई नारि १२०
योवन पुन तप तेज युत, रूपवान नृप वीर॥
पुन प्रेरी सुरराज की, किसविध बांधे धीर १२१

सुंदरीवचन किरीट छन्द।

नाथसुनो तुम भूपति दीसत, सुंदर देह कहो किम खोवत। हाथ न आवत है फिर योवन, योवन बीत गये नर खेवत॥ है सफला तिसका जगजीवन, जो युवती युत आसन सोवत। दूध दधी घृत सों तनु-पोषित, नारिमुखांबुज को नित जोवत॥ १३२॥

पूर्णवचन किरीटछन्द।

री तनु शोषण से मनशोषण, क्षीण भया मन ईश्वर होवत। देह सुपोषण से मन पोषण, पुष्ट भया मन

१ अहंकार। २ वन।

योषित जोवत ॥ योषित भोगित रोग भयो जब, रात दिने तब मूरख रोवत । है तिसको धिक जो युवती युत, मानुष देह वृथा जग खोवत ॥ १३३ ॥

सुंदरीवचन मत्तगयंदछंद ।

मंदिर मंदिर में अतिसुंदर, नूतन मंच सतुल सुहावें । मंचन मंचन में वरयोषित, द्वादश भूषण धार दिखावें ॥ षोडश देह शृंगार करें नित, देख जिनेशत कामल जावें । त्याग तिनें विरथा नरमूरख, रात दिने बन में दुखपावें ॥ १३४ ॥

पूर्णवचन मत्तगयंदछन्द ।

जंगल जंगल में सतसंगाति, संगति संगति कीरति गावें । कीरति कीरति में हरिके पद, पंकज द्वंद हृदे दरसावें ॥ तापद पंकज से उरशीतल, तो मन मीन सुखांबुसमावें । तासुखको तजके नरमूरख, योषित से मिलके दुखपावें ॥ १३५ ॥

सुंदरीवचन मत्तगयंदछन्द ।

जो सुखयोषित संगाति होवत, सो सुख और कहां

---

१ तोपक, तकिया । २ नूपुर, कौंधनी, हार, चूड़ी, अंगूठी, कंकण, बाजूबंध, कंठाभरण, बेसर, मस्तकाभरण, टीका, सीसफूल, । ३ अङ्गशुची, मज्जन, स्वच्छवस्त्र, माहावर (लाखी-रंग,) केश सुधारना, मांग में सिंदूर भरना, माथे पर तिलक, ठोडीपर तिल, मेहंदी, सुगन्धित द्रव्य लेप, भूषण, सुगन्ध, मुख राग, दन्त राग, अधरराग, काजल ।

नरपावें। नाग सुरासुर खेचर भूचेर, योषित हेत सुरेश मनावें॥ इंद्रपुरी अरु ब्रह्मपुरी पर, भूमि पताल रसातल धावें। जो नहि नारि मिले हरिकेपद, तो तिस में नहि कोनर जावें॥ १२६॥

पूर्णवचन मत्तगयंदछन्द।

जो सुखब्रह्म विचार कियेपर, सो सुख और कहां नरपावें। तासुख की इकलेश मिले जग, भोगन में इम आगम गावें॥ आनँद रूप स्व आतम है नर, ज्ञान विना भ्रमेत दुखपावें। नाभि विषे मृग के कसतूरिक, हेत सुगंध दशो दिशि धावें॥ १२७॥

सुंदरीवचन सवैया।

सिर सूक्ष्म श्यामल चिक्कनवा, कच कोमल कुंचित की छबिछाई। मुखशारद पूरण चंद्र समं, युग नेत्र सरोज खिले सुखदाई॥ नक्क वेसर कान सुकुंडल हैं, अधरोंपर शोभित पानललाई। असनारि नहीं जिसके घरमें, व्रिथा तिसका जगजीवन जाई॥ १३८॥

पूर्णबचनसवैया।

निगमागम नाहिपढा जिसने, जिससेनरकी जडता सबजाई। गुरु से नहि ज्ञानलिया जिसने, जिससे भवबंधन से छुटकाई॥ नगुरू वचनामृत पानकिये, तिन

१ सिद्ध। २ मनुष्य। ३ केश। ४ टेढे।

के पद सेवन नामतिलाई। धनयौवन में गलतानरहा, विरथा तिसका जग जीवन जाई ॥ १३९ ॥

सुंदरीवचन सवैया।

रंद[1] कुंदकली गल शंखसमं, नवकोकिल के समवाक सुहाई। सुमसूनन के गजमौक्तिन के, उरहार पडे मणिकी झलकाई ॥ घनपीन[2] पयोधर[3] भारनती, कुच[4] कुंकुम लेप सुगंध प्रछाई। तिससे नहि जो अनुराग करा, विरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४० ॥

पूर्णवचन सवैया।

नहिव्याकरणादि अधेनकिया, जिससे जनके मनका तमजाई। नहि कोशपढा वर पंडित से, जिससे छुटती मनकी वधराई ॥ नहि साहितन्यायपढा जिससे सब जावत मूकत पिंगलताई। भर पेटपशू समसोवतहै, विरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४१ ॥

सुंदरीवचन सवैया।

युगपीन भुजंगसमान भुजा, हिम अंगद हीर जडे चमकाई। करकांचन कंकण शोभित हैं, नख लालमणी समदेत दिखाई ॥ कर अंगुलि में मुँदरी झलके, युगपाणिविषे नवयार्वकलाई। नहि भेटभयी असयोषित से, बिरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४२ ॥

---

१ दांत २ सघन ३ कठोर ४ कुच ५ नम्र ६ पुष्ट ७ सुवर्ण ८ मैहिंदी

पूर्णवचन सवैया ।

सतसंगति कीननहीं क्षण में, तिनकी नहि सेवकरी मातिलाई । नहि विप्रन गो करदान दिया, तिनकोनहि श्रावण क्षीर खवाई ॥ नहि तीरथ दान सनान किये, जिससे जनमांतर पापनसाई । धनगाड़ महीपर राखत जो, विरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४३ ॥

सुंदरीवचन सवैया ।

किहरी कटि विंवे नितंवे विषे, मणि हेमैजडी रशनाँ छनकाई । विधियाने करी समचालत है, पद पंकज नूपुरकी ध्वनि छाई ॥ हँसके शुभ गोल कपोलन से मुनि लोगन के मनमोह कराई । स्वपने नहि जो असनारि लखी, विरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४४ ॥

पूर्णवचन सवैया ।

घनश्याम स्वरूप अनूपहरी, श्रुतिकुंडल सीस किरिट सुहाई । करमें मुरली पदनूपुर हैं, पटपीत पुशाक नवीन पिराई ॥ नहि ध्यानकिया हरिका जिससे, मन की सब छूटत चंचलताई । नहि प्रीतिकरी शिवसे जिसने, विरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४५ ॥

सुंदरीवचन सवैया ।

तनु गौर किशोर मनो हरमें, शुभ चंदन चर्चितकी

---

१ लालफलके समान २ चूतड़ ३ सुवर्ण ४ कौदनी ५ हंस ६ कान

छबिछाई । असितांबरमें अरुणांबर में, हरितांबरमें ज़रचारु लगाई ॥ कसतूरि कपूर सुगंध रचे, बिजली सम अंबर देतदिखाई । प्रिय लागतना असनारि जिसे बिरथा तिसका जगजीवन जाई ॥ १४६ ॥

पूर्णवचन सवैया ।

रघुनंदन माधव कृष्ण हरे, यदुनंदन देवपते जनत्राता । नरकांतक वामन राम विभो, रघुवंशमणे जनवांछितदाता ॥ ब्रजपालक हेजगदीशप्रभो, पुरुषोत्तम केशव हेबलभ्राता । इति आदिकना हरिनाम जपे, बिरथा तिसका जगजीवन जाता ॥ १४७ ॥

सुंदरीवचन सवैया ।

उशनानलके समशीत समे, हिमके सम ग्रीषम मांहि सुहाई । जननी सम भोजन काल विषे, गणिका सम भोग समे सुखदाई ॥ शुभ मंत्र विषे सम मंत्रिनके, हित में सम मित्रन के जगगाई । वरसेवनमें सम सेवक के, असनारि कहो किसको न सुहाई १४८

पूर्णवचन सवैया ।

मल मूत्र भरी जिम गेह दरी, अपवित्र सदा दुरगंध प्रछाई । नित क्रोध कृशानु जलावत है, उरवेधत

१ नीलेवस्त्र २ आग्निके समगर्म शरीर ३ वर्फ ४ घरकीमोरी ५ अग्नि

बाक नराच चलाई ॥ धनप्राक्रम पुण्य सुकीरति को, मनरूपमनोहर को हरलाई । इक देवत मूत्र पुरीषे घड़ी, असनारि कहो किसके मनभाई ॥ १४९ ॥

सुंदरीवचन सवैया ।

प्रियवाक प्रसन्न मुखांबुज है, सुसनेह विलोकत हैं हरषाई । नरकी मदनानल शांतविषे, सुसुधा बरषा समदेत दिखाई ॥ सवयोपित लक्षण जासविषे, मृदुदेहाविषे शुभसौरभ आई । विनपौरुष आपहिं आय मिले, असनारि कहो किसको नसुहाई ॥ १५० ॥

पूर्णवचन सवैया ।

छलकी गठरी कपटाकर है, जगरौरव द्वारन झूठड़ाई । नहि पुण्यकरे अघसे नडरे, जन चातुरको जग लेत ठगाई ॥ अहिकाटत से विषदेहचढ़े, जिसके निरखे विषदेह चढाई । स्वपने नदया जिसके मनमें, असनारि कहो किसके मनभाई ॥ १५१ ॥

सुत भ्रात पिता युवती जननी, धन धाम विषे सुखमान बड़ाई । तजके इनको वनवास करे, हरिके पद पंकज प्रीति लगाई ॥ नरधन्य वही जिन भोग

१ बाण २ विष्ठा ३ कामकीअग्नि ४ कोमल ५ सुगंध ६ मथन ७ खानी ८ सर्प ।

तजे, तिनकी निगमागम कीरति गाई। जग जीवन मुक्त भये जनते, तजके तनुको हरिमांहि समाई १५२

कविवचन दोहा।

लख योगी के योग को, राणी मनघबराय॥
शाप भीतिसें नाथके, चरणपड़ी लिपटाय १५३

सुंदरीवचन तोटक छन्द।

कर माफ कसूर क्षमाकरिये, मम सीस विषे करको धरिये॥ तप तेज तुमार न जानतथी सबको अपने सम मानत थी॥ १५४॥

पूर्णवचन तोटक छन्द।

निरभै घरजाव विशालमती, किसिको नहि शापत साधुयती॥ तुमने कुछना तकलीफ दिया। यह काम सबी सुरनाथ किया॥ १५५॥

कविवचन दोहा।

गयी सुंदरी धाम मे, नाथ चरण धरमाथ॥
तीरथदर्स सनानहित, गमने पूरणनाथ १५६

इति द्वितीयोऽङ्कः।

अथ दृश्यस्थान स्यालकोटबाग।

आपहुँचे निज देश में, विचरत विचरतनाथ॥
स्यालकोटके बाग में, वासकरासुखसाथ १५७

बहुत वर्षका बाग यह, शुष्करहा बिन पात ॥
हरित भया यतिवास से, फैलगईसबबात।१५८।
करामात लखनाथ की, तहां आत नरनारि ॥
तनु अरोग सुत कामना, पूरणहोतअपार १५९
सुनकर लूणानाथ पै, आई बाग मझार ॥
हाल सुनाया आपना, सकलाखेदपसार १६०

लूणावचन चौपाई।

सुनोनाथ मैं परम दुखारी। आईहूं प्रभु शरण तुमारी ॥
संतदयालु सर्व सुखदाता । होवोदुःखसिंधुसेत्राता १६१
मैं हूं भूपति की लघुरानी। लूणानाम सर्वजन जानी ॥
चतुर्विंशती गमनेसाला । नहि बोलेमोसेभूपाला १६२
नहिसुतभयामोरगृहमाहीं । मोसमऔरदुखीजगनाहीं
याविधमुझेबुलावेभूपा। पुत्रहोयममपरमअनूपा १६३

कविवचन दोहा।

पुत्र शोक संतपत नित, आये तहां नृपाल ॥
करप्रणाम बैठेनृपति, बोलेनाथदयाल॥१६४॥

पूर्णवचन चौपाई।

कहो भूप है क्षेम तुमारे। प्रजा सुखी तव राज्य मझारे ॥
किसकारणतूंतेजाविहीना। चिंतातुरउरदुखमनदीना।१६५
क्यापरयोषितसोरतिकीनी। नबजज्ञानविनऔषधदीनी

शूद्रसदनक्याभोजनकीना।द्विजकोकहकरनहिपुनदीना
द्विजसुरसाधूनृपतिअगारी। क्यातुमनेनृपझूठउचारी॥
क्यातुमधर्मन्यायनहिकीना। किंचकिसीसेरिशबतलीना
कन्या पै वा कुछधनलीना। नीरपान कीना बिनचीना॥
क्यातुमअमलकरतहोराजा। क्याअर्थीकाकीननकाजा
क्यातवहारभयीसंग्रामा।द्विजसुरकोनहिकीनप्रणामा॥
क्यामूंदातुमनेसरकूआ।क्यातुमनेनृपखेलाजूआ १६९
क्यातवपत्नीकरानिरादर।द्विजकोदानादियानहिसादर।
तोरदेशक्यागोबधहूआ।क्याहरिभक्तपुत्रतवमूआ १७०

राजावचन चौपाई।

नाथअंत में भाखी जोई। दुखकारण जानो प्रभुसोई॥
भयापुत्रममएकसुजाना।जाकेगुणनहिजातबखाना।७१
सुंदर धर्मधुरंधर बीरा। गुरुहरिभक्त शिरोमणि धीरा॥
कुलनभपूरणचंद्रसमाना।जननीराहुग्रसासबजाना ७२
नहिछूटाअबलोशशिसोही। नाहिरविउदयभयातमद्रोही
रातदिवसयाहेतअँधेरा।तवमुखशशिलखकुछकउजेरा।
संतसमाननाहिउपकारी।सुरनरनागत्रिलोकमँझारी॥
करोकृपाजिसविधतमजाई।देखूंविधुवारविदर्साई १७४

पूर्णवचन चौपाई।

हेनरनाह धीर उरधारो। होवो सतसंकल्प तुमारो॥
तुमधर्मज्ञअदोषविचारी।कर्म रेखजगटरतनटारी १७५॥

कहो भूप क्यों पुत्र तुमारा। मरवाया राणी अतिप्यारा।
असन सुना देखा हम कोई। मारे सुत को जननी जोई १७६

राजावचन चौपाई।

यह सब पूछो इस से सांई। बैठी है तुमरे पदमांई॥
कुलिश समान कठिन उर जोई। पूरण का मरणा कहसोई
ऐसी तो है यह मम राणी। छाती वज्र बाण सम बाणी॥

पूर्णवचन चौपाई।

पूरण से वरती है जोई। मात भाखिये साँची सोई॥
जो अब झूठ कहा तुम माई। शाप अनल से देहु जराई॥
भाखें जो नृप पै सच माता। तव कसूर अब माफ कराता॥
प्रीति करेगा तुम से भूपा। होवेगा तव तनुज सुरूपा॥

लूणावचन चौपाई।

त्राहि त्राहि मोको तुम स्वामी। तुम योगीश्वर अंतर्यामी
जानत हो क्या भाखूं सांई। मोसम पापिनि नहि जगमाई
मात मात कर मोको नाथा। मम पद पूरण धरिया माथा.
रूप देख कर पूरण केरा। तब मन मोहित हूआ मेरा १८१
जब पूरण नहि पाप कमाया। तब मैं झूठ भाख मरवाया
शरणागत तव पद जलजाता। नृप कोपानल सैं हो त्राता।

कविवचन दोहा।

लूणा के सुन वचन नृप, क्रोध जलत शरीर॥

हाथ मारकर भूमि में, रुदन करत बेधीर १८३

पूर्णवचन चौपाई ।

शांतकरो उरको नरनाहू। जीत क्रोध थिर करोस्वभाहू॥
परमशत्रुयहक्रोधकृशानू।हृदय दहतिजिमद्वादशभानू
चतुर्वर्ग[1] का नाशक जोई। ताकर लाभ कहो क्या होई॥
गयी बात पुन लौट नआवे।कर अतिक्रोध वृथा दुखपावे
लूणा को राखो घरमांई। करो प्रीति पूरवकी न्यांई॥
जो तुम कहा मान हो मेरो। जीवित पुत्र मिलावूं तेरो॥

कविवचन दोहा ।

सुनकर वचन यतीश के, हर्षित हो भूपाल॥
कर प्रणाम योगीशपद, बोलावचन रसाल॥

राजावचन चौपाई ।

यद्यपिलूणा लवण समाना।दुखित घावमें सुनोसुजाना
इसे देख मम लागत आगी। उभेवंश इसकीनादागी॥
परजो जीवत पूरण पावूं। हुकम आपका सीस उठावूं
ऋणीरहूं शतजन्म गुसांई। करूं सेव सेवक की न्यांई॥

पूर्णवचन चौपाई ।

जावो भूप मात तुम दोऊ। सत्य करूंगा भाखा जोऊ॥
प्राता भूप दंपती[2] आवो। युगल मनोरथ निश्चय पावो

१ धर्म अर्थ काम मोक्ष। २ स्त्री पति दोनो।

कविवचन दोहा ।

नमस्कार कर दंपती, गमने गेह मँझार ॥
दासी एक सुजान अति, गयी इच्छराद्वार १६१

दासीवचन चौपाई ।

सुनो मात इकसाधू आया।अतिसुंदर जिम तुमरा जाया
हैयोगीश्वर पंडित ज्ञानी । मानें भूपलोगअरुरानी १६२
धार मनोरथ जावत जोऊ। पूरण होत कामनासोऊ ॥
काणे अंधे वहुत दुखारे । गयेनाथ पै होय सुखारे १६३
पुत्रशोकसोंभयीदुखारी । रोरोके तुम आंख विगारी ॥
तांपै चलो आपजोमाई । मिलहैंनयनयुग्मसुखपाई १९४

कविवचन दोहा ।

दासीके सुनि वचन तब, उपजा उर संताप ॥
करकेयाद तनूज को, करहै विविधविलाप १६५

इच्छरा विलाप रेखता ।

कृपण अतिदेव क्याकीना । प्रथम इकनूयनही दीना
शशी सम तासकीशोभा । देखमन दैवका लोभा ॥
नयन कोदे पछो ताया । बहुतविधतिसकरी माया ॥
अखी तिस छीनके लेई । अहो हादेव निर्देई ॥
अरे यम नारि तूहोवो । तनुज तव गोदमें सोवो ॥
मरेवो देखते तेरे । दिसैंगे दुख तवी मेरे ॥

१ पुत्र । २ बड़ाकष्टहै ।

शोक तव चित्त को जारे । नहींपुनऔर के मोरे ॥
करेवो ईरषा मोको । नयन की आस किम तोको ॥
गया सोदूर के राही । नहीं कोपत्रका आई ॥
विना प्रिय पूरणे मैना । नहींहै नयन में चैना ॥१९६॥

कविवचन दोहा

कर विलाप रानीगिरी, विधिहिविविध देशाप ॥
मानो डसी भुजंगकी, पुन पुन करत विलाप ॥

पुनः इच्छरा विलाप रेखता ।

चखोरी देखिये तां को, मती वो होय गो बांको ।
नयन विन देख के माई, दया उस के हृदय आई ॥
कि होकर नाथ का चेरा, करा तिस लौट के फेरा ॥
करे गोपाल जो दाया, मिलूं सुतको गलेलाया ॥१९८॥

कविवचन दोहा ।

रुदन करत राणी गिरी, तबी इच्छरा द्वार ॥
गया भूमि पति तास को, दीनी धीर अपार १९९

राजा वचन चौपाई ॥

सुनोप्रियेइकयोगीआया।शरदचंद्रसमसन्न सुखदाया ॥
शुष्कबागजिसहरिताकीना। बहुतनतांइनयनजिनदीना।
चलो तासकोहालसुनावो । देवेनयनपरमसुखपावो ॥
जोदयालुहूए यति ज्ञानी।सुतदुखमिटहैगोतवरानी २०१

इच्छरा वचन वार्त्तिक

हेमहाराज! ऐसे मेरे भाग्य कहांहैं जोप्राणप्रिय पुत्रके विरहका दुःखमिटे तथापि जोआपकी आज्ञा ॥ २०२ ॥

कविवचन दोहा ।

उभयनारिको साथले, गये नाथके द्वार ।
सहितदासियांदासनृप, कीनीजायजुहार२०३

राजा वचन चौपाई ।

यह मम जेष्ठ नारि यतिराया। पूरण चंद्र पुत्र जिसजाया
यहममलघुराणीहैसांई।निजकुलघातिनिनागिनिन्यांई

पूर्णवचन चौपाई ।

सुनो मात तुम क्यों दुखपावो।रोरोके क्योंनयन दुखावो
मेरे पुत्र फिर हाथ न आवत। चाहे कोटिक यत्न करावत
पती पुत्र नारी पितु माता।कौन किसी की करे सहाता
कर्म एक सबकेयुत जावत।कर जन मोहपरम दुखपावत
मोहहि सर्व शोक का हेतू। निर्मोहहि दुख जलधरसेतू
ताते तजो मोह सुनमाता। भजो ईश को जो दुखत्राता

कवि वचन दोहा ।

पूरण केसुन वचन तब, मातापट न समात ॥
दूधपडाकुचयुगलमें, आनँदकहानजात।२०८।

होवत है रोमांचतनु, फरकत वाम सुगात ॥
ज्ञानपुत्रकेबोलसम, बोलीगद्गदबात ॥ २०९॥

इच्छरा वचन चौपाई

वचनतुमारे नाथसुजाना । जलत धामआसारसमाना ॥
सत्यकहोतुमकोहोसांई।दीसततुममममसुतकीन्याई २१०
क्या ईश्वरने कीनीदाया । रूपधारपूरण का आया ॥
मेरेपुत्रनाहिमिलतसुखारे।उदयभयेहैंभागहमा रे ।२११।
वचनआप के लागत ऐसे । ममतनूजपूरण के जैसे ॥
तुमरावदनचंद्रद्युतिजोई॥लियोपछाननयनजोहोई२१२

पूर्णवचन चौपाई ।

लेवोमात औषधी मेरो।युगल नयन पंकज में फेरो ॥
खुलेनेत्र युगतुमरेमाई । अल्पवस्तुसबपडे दिखाई २१३
जो तवमन चाहत हैमाता । सोसबपूरणकरे विधाता ॥
सत्यसनेहजहांपरहोई ।।निश्चयजानोमिलहैसोई२१४

कविवचन दोहा ।

लेकर औषध नाथ से, करसे नयन लगाय ॥
खुलेनेत्रलखपुत्रको, मिलीकंठमेंधाय ॥२१५॥
जान पुत्र को भूपमणि, हर्ष न हृदय समात ॥
गिराप्रथमसुतकेचरण,उठकरपुनगललात २१६

१ वर्षा । २ कांति ।

लज्जितहो तब चित्त में, लूणामन घबराय ॥
तातकालनृपपुत्रके, चरणरही लिपटाय २१७
पूरण का सुन नारिनर, सचिव सेठ सौकार ॥
विविधभेटलेनाथपै, आयेबागमझार॥२१८॥
देन वधाई लोग सब, आये नापित नाट ॥
दियेदानबहुमातनृप,स्तवनकरततबभाट२१९

भट्टवचन कवित्त ।

सुनो नरनाह[1] प्यारे, तव सत तेजमारे, दशोदिशि देवछिपे, तीनलोक जानिये । तव सत तेजजरा, कंज मध्य वासकरा, विधिकी कुगति भयी, औरकी भी भानिये ॥ सत्यलोक त्यागहरी, क्षीरसिंधु वासकरी, हिम गिरि धामकरा, धरमंजमानिये।शीतलता हेतहर, भालचंद्रगंगधर, तैसेभयेऔरसुर, भूपकयावखानिये २२०

कविवचन दोहा ।

हाथ जोडकर नाथ पै, उठकर कहत वज़ीर ॥
सर्वलोगके चित्तकी,जानचतुरमणिधीर २२१

मंत्रिवचन झूलना ।

करो माफकासूर तोबातभाखूं,बडे भागसे आपका दर्सपाया।रहेनाथजी कूपके बीच कैसे, कहो कौन ऊपा-

1 नरनारायण ।

यसे अन्नखाया ॥ कदा कौनने कूपसे आपको जी, प्रजा भूपपै तासने कीनदाया । सबी जानना चाहिते बातथारी, कहोकौनने आपका अंगलाया ॥ २२२ ॥

पूर्णवचन चंद्रकला छंद ।

जननी जनकादिक को तज के, मुझने जिसका नहित्याग किया । जिस माधव लाख रचे गृह में, जननी युत पांडव राखलिया ॥ तिसकी करुणाकर कूपरहा, जिस द्रौपदि को बहुचीर दिया । भवकूपपडे मुझको लखके, गुरुगोरखनाथ निकास लिया ॥ २२३ ॥

राजा वचन झूलना ।

सुनोपुत्र दोहाथ को जोडभाखूं, चलो धाम वैठो करो राज्यसांई । अवी कालनाहीं यती होवनेका, नहीं भोगभोगे कछूलोक मांई ॥ मुझें योगका साधना योग्य हैजी, भयावृद्ध मैं भोगकी आसनांई । रखोतालियां धामखाज़ानियोंकी, करोशासनातात आरण्यजांई २२४

पूर्णवचन झूलना ।

सुनोतात भूपालजी बातमेरी, नहीं थूक के चाटता लोग कोई । किये त्यागपूरीषै[1] को मेललेवे, कहें लोग सारे महामूढ सोई । करेभोग जो योग को धारके जी, तिसें रौरवागारमें वास होई । करो आप वा राज्य को बां-

१ विष्टा ।

टदेवो, नहींहोयगा भाखते आप जोई ॥ २२५ ॥

इच्छरावचन झूलना।

सुनो तातमैं जोरके हाथ भाखूं, नहीं भावताती करो राज्य नाहीं।जबी जीवती लोक में मात तेरी, करो वास ऐसे इसी बागमाहीं ॥ मुझे आसरा होयगो आपका जी, तुझे देखके चित्त में शांत पांई। यदी त्याग के जायगो पुत्र प्यारे, पुना होयगो हाल सो मोरसांई २२६

पूर्णवचन झूलना।

यतीपान पानी गुरू चोर डाकी, इने वासनायोग्य है एक जांई। करे भेड की भेड ना पालना जी, पशूपाल आधीन सब भेड माई।।नहीं आसराजीव का जीव तैसे, हरी आसरे सर्व संसार आई। विना भक्ति भगवान की शांति नाहीं, सबी शोकदातापती पुत्र भाई ॥ २२७ ॥

लूणावचन झूलना।

सुनो तात मैं आपने पाप मारि, करूं अर्जना नाथ जी आपतांई।यदी करोगे ख्याल में पाप मेरे, मुझे मिलेगी नरक में ठौर नांई।।करो माफ कासूर मैं शरण तेरी, रची नारिकर्त्तारने मूढसांई ।दया कीजिये नाथजी पुत्र देवो, चले वंशभूपाल का लोक मांई ॥ २२८ ॥

पूर्णवचन झूलना।

सुनो मात नाकीजिये सोचराई, कहूं सत्य तेरा नहीं

१ एक स्थान में।

दोष कोई । लिखा लेखकर्त्तारने भाल मेरे, कहो कौन मेट विधी अंक जोई॥धरो धीर यह लीजिये लौंगखानो-गुणी पुत्र तेरा रूपवान होई । बलीबीरगंभीर ओदार होगा, महीपाल विख्यात भूलोक सोई ॥ २२९ ॥

राजावचन झूलना ।

कहा कहूं मैं आपने भागकी जी, नहीं मोर सामान्य है और कोई । मेरे पुत्र किम कौन के हाथ आवें,तुमें देख के चित्त में शांति होई ॥ रहो बाग में भया ना भ्रात जो लौं, सचा कीजिये जी कहा वाक जोई । लघू भ्रातके जन्म को देखके जी,लगे ठीकजो कीजिये फेर सोई ३०

पूर्णवचनझूलना ।

भयी ईशकी प्रेरणा भूपजोलौं, करूंवासतोलौं प्रजा लोग त्राता । सदायोगवीयोग वाहोतनाहीं, मिलेवी-छुडे मेलताआपधाता । प्रजासेवकों राणियां साथलेके चलोगेह में होयगोकूशलाता । उभेनारिको एकसा जाननाजी, नहींराखनाचित्तमें भेदताता ॥ २३१ ॥

कविवचन दोहा ।

नमस्कार कर नाथ को, नृपति गये निजधाम ॥
सहित राणियां लोग सब, गये गेह लखशाम॥
अर्द्धरात्रि में नाथ ने, सोचा चित्त मझार ॥

यहां लोग की भीड में, होत न भजन विचार ॥
ताते जाना ठीक है, यहां न रहिना योग ॥
सन्मुख जान न देहि गे, मात पिता सब लोग ॥
यह विचार कर रात्रि में, गमने पूरण नाथ ॥
विचरत विचरत देश में, भेट भयी गुरुसाथ ॥
गुरुपद कीन प्रणाम तब, पूरण दंड समान ॥
श्रीमद्गोरखनाथ ने, पूछा क्षेम बयान २३६

गोरक्षवचन चौपाई ।

कहो सौम्य रहा क्षेम तुमारे, लागत है मन ब्रह्म विचारे।
भजन ध्यान होवेहैताता । कबीआपको मिलीस्त्रमाता।

पूर्ण वचन चौपाई

तवकरुणासों सवकुछ नाथा।विचरादेशदेश सुखसाथा
कृपा आपकी जापर होई । नहि देखत दुख स्वपनेसोई
तवआज्ञाको सिरधरसांई । गमनानाथ जनक पुरमांई
दयाआपकी सबपरिवारा । शोकत्याग के भयासुखारा

कवि वचन दोहा ।

इत्यादिक संवाद कर, श्रीमत् पूरण नाथ ॥
गुरु गोरख के पाद में, वास करा सुखसाथ४०

१. पिताके ।

उत नृप राणी आदि सब, आये बाग मझार॥
पूरण के देखे विना, सब उर भये दुखार २४१
रुदन करत अति शोक से,नृप राणी दुखपात॥
पुत्र विरह संतप्त उर, सुत गुण गावत मात॥

इच्छरावचन सारछन्द।

घरआवो पूत पियारो ॥ टेक ॥

सूनोनगर पूतबिन दीसे,सूनो सदन कुमारो।
सूनी गोद तनुजबिन लागे, सूनो चौक चुबारो।
रससों रहित रसोई लागत, पानीलागत खारो।
जो पूरण की खबर सुनावे, तांपै जांबलिहारो।
बिनप्रिय तनयदर्श हूं आंधी, जननी नाहि सहारो।
ज्यहिज्यहिजातपूतममललना, त्यहित्यहिकरतउजारो
बिन प्रियलाल दर्श नहि सूझत, रातदिवस अंधिहारो
दर्शन देवेगो जबपूरण, तबहोगाभिनसारो। २४३।

कवि वचन दोहा।

दुखित देखकर भूपको, राणी का सुनगान।
बोलेधीरजहेततब, सचिवमणीमतिमान२४४

मंत्रि वचन चौपाई।

जाकृपालु नेहेनरराया। मृतसुत तुमको फेरमिलाया

पुनप्रिय पूरण कों सुनसोई । कबीमिलावेगानृपतोई
धरधीरजगमनोगृहमाहीं । भूपतिशोककालअबनाहीं
यहबडभाग जानियेभूपा।जीवतहैतव पुत्र अनूपा २४६
जीवत है जगमें जनजोई । मिलहै कवीनृपतिप्रियसोई
तुमसमानजगकोबडभागी।जिनकेसुतउरहरिरतिलागी
हरिशरणागत है जनजोई । एकोत्तर शतकुलकोसोई
हेनृप जगत सिंधुसें तारे । वासकरेंतेस्वर्गमझारे २४८

कवि वचन दोहा ।

सुनकरवचन वजीरके, राणी अरुनरनाथ ॥
अतिप्रसन्नहो शोकतज, गृहगममेसुखसाथ ॥
उदासीनगोपालभृत, मथुरापुरीनिवास ।
कराबाणबाणांकभू । पूरणभक्तविलास । २५०।

इति श्रीमत्परमहंसोदासीन शिरोवतंस स्वामिज्ञानदास शिष्य गोपालदासेन विरचितः पूर्णविलासः समाप्तः ॥

शुभंभूयात् ।



ओ३म्

श्रीकृष्ण भगवतेनमः ।

गोपीचंद्र विनोद ।

कविवचन दोहा ।

गोपीचंद्र महीप वर, अतिसुंदर बलधाम ॥
भया रूप जाका निरख, मोहित हैं सुर वाम॥१॥
मैनावंती मात तस, कृष्णावंती नारि ॥
माता परम सुजान सो, सुतको कहत विचार ॥

मैनावंती वचन झूलना ।

सुनो चित्त दे तात बलिहार जावूं, गरल तुल्य जानो राज्य भोग सारे। तपो राज्य है राज्य सों नरक होवे, कहें संत पोराण अरु वेदचारे॥ राज्यभोगको त्यागके योग लेवो, अमर होव जासो नहीं कालमारे। सुनोतात गोपालकी शरण होवो, जगत् सिंधुसे भक्त जिन बहुत तारे ॥ २ ॥

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

राज्यत्याग के करूं मैं योगकैसे, भोग भोगने को करे चित्त मेरा। यहां पलँगशय्या धाम सोवने को, वहां खाकमें लोटना विपिन डेरा॥ यहां बहुतपरकारके गर्म सो-

जन, वहां टूकहैं घरोघर पायफेरा। राज्यभोगको भोगके वर्षबारां, सीसधरूंगा मातमैं वाकतेरा ॥ ४ ॥

मैनावंती वचन भूलना।

घडीएकका नैक विश्वास नाहीं, मासवर्षकी कहोको तात जाने। बाल वृद्धजोवानको नाहिछोडे, कालवली नें बहुत बलवानखाने ॥ गये राज्यको भोग वहुभूपपूता, तोर बापदादा सबी खाकसाने। सीसआपके रातादिन कालनाचे, राज्यभोगमें मत्ततू नाहिजाने ॥ ५ ॥

गोपीचंद्र वचन भूलना।

राज्यहेत योगीयोग करनमाता, यज्ञजाप करते राज्य हेत सारे। दयादान अरु धर्मसे राज्यकरना, क्षत्र धर्मको भाखते वेदचारे॥ धर्मयुद्ध से मारकर वैरियोंको, पाउँ लोकमें कीरती भोगसारे। प्राण रहेतो करूंगा राज्यमाई, यदी मरातो जाउँगा स्वर्गद्वारे ॥ ६ ॥

मैनावंती वचन भूलना।

बहुतवार तू भयाहै भूपपूता, बहुतबार हूआ इंद्र स्वर्गद्वारे। कईवार तू पुरुष अरुनारि हूआ, तृसहुए ना आजलौ करणथारे ॥ भोगभोग के तृप्त नहि होत कोई, तेलधारसे अग्निजिमि अधिक जारे। जहिरयुक्त जिमि क्षीरतिम भोगजानो. तिनैंत्याग गोपालकी शरणधारे ७

१ इंद्रिय।

गोपीचंद्र वचन झूलना।

भया पुत्रनाहि धाममें एककोई. कौन करेगा राज्यको समुझ माई। पित्र गिरेंगे स्वर्गसे भूमि माहीं, जबी पिंड नीरांजली नाहि पाई॥ शापदेंइगी राणियां मातमोको, चोरजार सब लोकको लूटखाई। सुनोमात जिसभूपके राज्यमाहीं, प्रजादुःखपाये सोइनरकजाई॥ ८॥

मैनावंती वचन झूलना।

माततात ना नारियां पुत्रकोई, लेनदेन का बांधिया लोकसारा। चिदानंद तू सत्य विभुरूप बेटा,सुक्ख और से चाहसो अज्ञभारा। कर्म आपने आपसब भोगते हैं, नको स्वर्गदेवे नको नरकडारा। पती पुत्रको कोउना रोवताहै, रोय आपने सुःखको जगतसारा॥ ९॥

कविवचन दोहा।

जननी के उपदेश को, धार हृदय में भूप॥
हाथ जोड बोलत भया, जान गुरू का रूप १०

गोपीचंद्र वचन झूलना।

धन्य धन्य तू मात जी मात तू ही, करूं वंदना आप को कोटिबारा। फसा जगत् जंजाल में देख मोको, आप ज्ञान उपदेश कर पुत्रतारा॥ नहीं लोक में और की मात ऐसी, यथा आपने मोर अज्ञान जारा। दया आप

कीभोगसवरोगजाने,करूंयोगकोत्यागकेराज्यसारा ११
सुनोतात वाज़ीर दिलगीरहो ना,राज्यआपकीसर्वसा
पुरदभाई। प्रजापालनी धर्मसें राज्य करना, यथा पुत्रको
पाल है बाप माई॥ धीर दे वनी राणियां सारियां को, हु-
कम माननां मात का हर्ष पाई। साधु विप्र को सेवना
सर्वदा जी, अन्य नारि को जानना बहिन माई॥१२॥

कवि वचन दोहा।

वचन सुनत भूपाल के, दुखित भये वाज़ीर॥
बोले चतुर विचार कर, रुदन करत बेधीर १३

मंत्रि वचन भूलना।

महाराज यह आप क्या सोच लीना, वचन आप का
अग्नि सामान्य जारे। बैठतखत में शोभिते आप राजे,
सचिव दास हम हुकम के मनन वारे॥ हुकम करा जो
आपने करूंगा सो,सदा करूंगा वंदना तखत थारे।वचन
कहेगी दासको मातजोऊ,सोउकरूंगा नाथमैं सीसधारे

गोपीचंद्र वचन भूलना।

सुनो चित्त दे वाक मम लोग सारे, मोर जगे वाज़ीर
को जानिये जी। चोर जार बदमास के कर्म जोऊ, उनें
त्याग के वेद को मानिये जी। हक्क और का धेनु अरु सूर
जानो, सत्य बोलना भूठ नाहि सानिये जी। दान पुण्य
अरु ईश का भजनकरना,गुरू पीरको वंदना ठानियेजी

कवि वचन दोहा ।

भूषण वसन समेत महि, डारे सकल नरेश ॥
तृणसमान वैभव तजा, जिसको मोह न लेश १६
श्रीमत्‌गोरखनाथ पद, करी दंडवत् जाय ॥
कर परिक्रमा हाल सब, भूपति दिया सुनाय १७

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

सुनो नाथ निर्नाथ के नाथ हो तुम, दास शरण आया तोर पाद सांई । दया कीजिये दीजिये योग मोको, भजूं ईश को और नहि काम कांई ॥ सेव करूंगा सर्वदा आप की जी, वचन करूंगा आपका हर्ष पांई । करो ज्ञान उपदेश जो मुक्त होवूं, राज्य भोग से नाथ कुछ काम नांई ॥

गोरक्ष वचन झूलना ।

नहीं राज्य को त्यागना भूमि स्वामी, समुझ योग का पालना कठिन प्यारे । भूमि सोवना मांग के खावना है, नहीं मिलैहैं अन्न घृत खांड वारे ॥ खाक लावनी खुदीका त्याग करना ॥ काम क्रोधअरु लोभको मारडारे । सुनोभूप जीजीतमृतरूपहोना , कबीमिलेनाहिभीखउरअग्निजारे

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

जोउ होयगा सहूंगा सोउ स्वामी, लोट जावना मरद

१ अहङ्कार ।

का काम नाहीं। बहुत भोग भोगे अबै तृप्त हूआ, कोउ हिरंस नारही है चित्तमाहीं।नारि नाहिरी भोग सब रोग दीसें, तखत बखत है कहो किम धाम जांई, कान फाडके मुंदरां डारिये जी, मेरबानगी के गेहै आवसांई ॥ २० ॥

कविवचन दोहा।

कानफाड मुंडित किया, दिया ज्ञान उपदेश ॥
खाकलगाई अंगमें, भगवाकीनावेश ॥ २१ ॥

गोरक्षवचन झूलना।

सुनो तात जगस्वप्न सामान्य झूठा, सर्व आतमाईश है सत्यभाई। चिदानंद सारूप आखंड हैं तू, विभू शुद्ध सारूप नहि मैल काई। हेमैताम्र चांदी मणी धूडजानो, सर्व नारि को जानिये बहिन माई। समुझ सोच के देश परदेश फिरना,मती दाग फकीरि को पर्स जाई॥२२॥

कविवचन दोहा

रुदन करत राणी सबी, आई भूपति पास।
मैनावंती सास सह, सहित दासियां दास २३

कृष्णावंती वचन झूलना।

हाथपकड फिर छोड के भागआया, करा क्या महीनाथ तुम साथ मेरे। तुझें छोड के रहूं ना धाममाहीं, जहां जांयगा चलूंगी संगतेरे। कौन मरद ऐसा छोड

१ अब। २ इच्छा। ३ घर। ४ सुवर्ण।

भारया को. त्यागहार शृंगार सिर खाकगेरे। तुझे दया ना आवती देखमोको, मात तातने सौंपियां हाथ तेरे २४

गोपीचंद्रवचन झूलना ।

संग लिखाथा काल जो साथ तेरे, सोउ वर्त्तिया कर्म को कौन फेरे। कोउ किसी के साथ ना जात जग में, तुझे त्याग के गये मा बापतेरे॥ जासईशनें करी पैदाश तेरी, तोर साथ सोई वचन मान मेरे। पती पुत्र की आस को छोडराणी, करोयादकर्त्तारको बैठडेरे॥ २५॥

कविवचन दोहा ।

याविध सब समुझाय के, गोपीचंद्र नरेश ।
गये उत्तराखंडको, दर्शन हेत सुरेश ॥ २६ ॥
भूपति की तरवार को, धरकर तखत वजीर ॥
आज्ञा मांगत मात पै, रुदन करत भरनीर२७

मंत्रिवचन झूलना ।

सुनो मात यह तालियांकोशवाली, तोप ढाल तलवारियां शस्त्र सारे। कमर कससके बाण[1] कोदंडलेके, सबी फौज ठाडी मात हुकमथारे॥ हाय हाय भूपाल का खेद भारी, मंदभाग सें मुझे ना कालमारे। विना भूपसे नगरसब शूनदीसे, वली ईश सें चलैनाउजर चारे २८

१ धनुष ।

मैनावंतीवचन झूलना ।

सुनो तात वज़ीर ना सोच करिये, वडे पुण्य से भूप-ने योग पाया । करे राज्य साहस्र शतवर्ष कोई, अंत छोडनी होयहै झूठमाया ।। धन्य धन्य है मातसो जगत् माहीं, जिनें भक्त विश्वेश का पुत्रजाया।खुशीहोय के बैठ तू तखत ऊपर,करोराज्य अविशंक जिमवेदगाया।

कविवचनदोहा ।

नमस्कार कर तखतको, बैठे जाय वजीर ।
करे अदालत धर्म वित्, झूठ सत्य को चीर ३०
संवत् द्वादश योगकर, गोपीचंद्रयतीश ॥
फिरतफिरतअपनेनगर,आपहुँचेअवनीश ३१
घरघर मांगत भीखको, देखभूपकी नारि ॥
जानआपने नाहको, लेआईमणिथार ॥३२॥

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

मणीमोतियां साथना कामकोई,मुझे अन्नकीभीख तू-डालमाई।मोहिर मोतियों से चवैनअच्छा,जिसेखायके संतकी भूखजाई ॥ जिसेखाय के ईशको यादकरिये, जिसेखायके देह आराम पाई । द्रव्यलेवना साधुका धर्मनाहीं, देहि अन्नतो नाहि चलजांव माई ॥३३॥

कृष्णावंती वचन झूलना ।

समुझ सोचके बोलना नाथ प्यारे, आप भूप मैं आप की नारि आई । तोरि इस जोबान को काटडारूं, कहत भारया को जोउ बहिन माई ॥ सोउ समय अब नाथ जी याद नाहीं, अनल साक्षि से सेहिरे बांध व्याही । सचे ईश के धाम में न्याय होगा, वहां देनगे सूर अरु चंद्र ग्वाही ३४

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

पती भारया साक सब तोड दीया, सचे ईश के साथ मैं प्रीति लाई । फकर धर्म यह संत गुरु वेद भाखा, सर्व नारि को जानना बहिन माई ॥ जबी भूपथे तबी तूं होत राणी, भये फकर तब रहा ना साक काई । दयादृष्टि जब कृष्ण व्रजराज कीनी, विविध दृष्टि भइ नष्ट इक दृष्टि पाई ३५

कृष्णावंती वचन झूलना ।

हुकमकरो तो अरज़मैं करूं सांई, यतीयोगियों साथ ना जोरकोई । विनापुत्र क्या जीवना लोकमाहीं, मैंनि-रासरीका कौन टेकहोई ॥ दयाकरोतो एक प्रियपुत्र देवो नतोजीवती को मुझे जानमोई । कहा हालमैं आपना आपताहीं, मनोभावती है करो बातसोई ॥ ३६ ॥

गोपीचंद्र वचन झूलना ।

जमाकरत धननारिसे प्रीतिकरते, भोगभोगते भेख-को धारजोई । साधुसंत आदर तिनें करतनाहीं पित्रपु-

त्र्के साहित तिननरक होई॥ मनुजपुत्र की आसको त्यागदेवो, वासुदेव घनश्याम ब्रजनाथ जोई॥करोप्रीति [illegible] यहिमानकेरी, तौ॥रिकरेगामुक्ति गोपालसोई २७

कविवचन दोहा।

[illegible] थकर उपदेश नृप, राणी का कर तोष॥
विचरत जीवन्मुक्त भू, जीत काम मद दोष ३८
साधुदास गोपाल नें, गोपीचंद्र विनोद॥
करा बाण बाणांक भू, ज्यहि सुन होवत मोद॥
रामकृष्ण पद वंदना, करहूं वारंवार॥
जिनकी करुणाकर यती, निजधर्मन को धार॥
प्रथमवासथामधुपुरी, अबगर्गालय वास॥
पोष्ट फरह मथुरा जिला, गोकुलजी के पास४१

समाप्तोयं ग्रन्थः।

आवश्यक-सूचना।

२ पृष्ठमें "प्रेष्ट" और "शर" शब्दकी टिप्पणी "वेदमंत्र" और "पूज्य" है सो २७ पृष्ठ में भूल से छपगई है।

अथ-शुद्धाशुद्धपत्रम्

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पं०
भक्त	भक्ति	७	१४	सतुल	सतूल	३१	५
तनु	तनू	१०	६	ब्रह्म	ब्रह्म	३२	२
नाखे	भाखे	११	१४	पिगल	पिंगल	३३	१३
तव	तव	१६	१६	चुवारे	चुवारो	६१	८
मया	भया	२०	१९	गममे	गमने	६२	१०

१ गडांयो।